ISSN: 0973-0583

# जय प्रकाश नारायण के छात्र आन्दोलन में कर्पूरी ठाकुर का योगदान

**गीतांजली भारती**

**शोध छात्र,राजनीति विज्ञान विभाग,तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय,भागलपुर**

**डॉ० रूचि श्री**

**शोध निर्देशिका,सहायक प्रोफेसर,राजनीति विज्ञान विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर**

## सारांश

भारतीय राजनीति में कर्पूरी ठाकुर का नाम एक ऐसे जननेता के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने सदैव जनता, विशेषकर गरीबों-पिछड़ों और छात्रों की आवाज को सशक्त बनाया। 1974 के बिहार छात्र आन्दोलन, जिसे बाद में सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन के नाम से जाना गया, में कर्पूरी ठाकुर की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही। यह आन्दोलन भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महँगाई और शैक्षणिक असमानताओं के विरुद्ध छात्रों द्वारा शुरू किया गया था। जय प्रकाश नारायण ने इसे व्यापक जनांदोलन का रूप दिया। इस दौरान कर्पूरी ठाकुर, जो स्वयं साधारण पृष्ठभूमि से आए थे और शिक्षा तथा समाज में व्याप्त असमानता के पीड़ितों की आवाज रहे, छात्रों के सबसे बड़े सहयोगी बने। कर्पूरी ठाकुर ने न केवल छात्रों की मांगों का समर्थन किया बल्कि विधान सभा और सड़क दोनों स्तरों पर उनकी समस्याओं को उठाया। वे मानते थे कि छात्रों के भीतर परिवर्त्तन की सबसे बड़ी ताकत है और समाज को नया दिशा देने की क्षमता भी। जब सरकार छात्रों के आन्दोलन को दबाने लगी तो कर्पूरी ठाकुर ने खुलकर इसकी आलोचना की और दमनकारी नीतियों का विरोध किया। जय प्रकाश नारायण और कर्पूरी ठाकुर के बीच गहरा वैचारिक सामंजस्य था। कर्पूरी जी ने आन्दोलन के दौरान छात्रों को संयम और अंहिसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यह संघर्ष केवल छात्रों का नहीं. बल्कि सम्पूर्ण समाज का है और भ्रष्ट तंत्र को बदलने के लिये सभी वर्गों को एकजुट होना होगा। जय प्रकाश नारायण के छात्र आन्दोलन को जनांदोलन में बदलने में कर्पूरी ठाकुर का योगदान केन्द्रीय था। उन्होंने छात्रों को राजनीतिक संरक्षण, नैतिक दिशा और संगठनात्मक शक्ति प्रदान की। उनके समर्पण और संघर्ष-शीलता के कारण ही यह आन्दोलन देश के लोकतांत्रिक इतिहास में मील का पत्थर बन सका।

**मुख्य शब्दः सम्पूर्ण क्रांति, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महंगाई, आन्दोलन, संघर्षशीलता।**

**Article Recived : 4/8/2025** **Article Aceptance: 25/8/2025**

**प्रस्तावना:**

1970 का दशक भारतीय राजनीति में गहरे उथल-पुथल का दौर था। उस समय बिहार सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक असमानताओं से जूझ रहा था। शिक्षा, रोजगार और सामाजिक न्याय की समस्याओं ने युवाओं और छात्रों को आंदोलित कर दिया था। उसी पृष्ठभूमि में जयप्रकाश नारायण ने बिहार आन्दोलन की अगुवाई की जिसे बाद में सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन के रूप में जाना गया। इस आन्दोलन ने भारत की राजनीति को नई दिशा दी। इस संघर्ष में कर्पूरी ठाकुर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

कर्पूरी ठाकुर साधारण परिवार से निकलकर राजनीति में आए थे। वे जननायक के रूप में जाने जाते थे क्योंकि वे गरीब मजदूर किसान और पिछड़े वर्गों की आवाज को बुलंद करते थे। जेपी आन्दोलन से पहले ही वे बिहार की राजनीति में एक लोकप्रिय नेता बन चुके थे और आमजन के बीच उनकी गहरी पकड़ थी। जब जय प्रकाश नारायण ने भ्रष्टाचार, असमानता और तानाशाही के खिलाफ संघर्ष का बिगुल बजाया, तब कर्पूरी ठाकुर उनके स्वाभाविक सहयोगी बने।

कर्पूरी ठाकुर ने बिहार के गाँव-गाँव में जाकर आन्दोलन की चेतना फैलाई। वे छात्रों और नौजवानों को जोड़ने में सफल रहे। उन्होंने जेपी के विचारों को आम बोलचाल की भाषा में लोगों तक पहुँचाया और आन्दोलन को जनान्दोलन का रूप देने में अहम भूमिका निभाई। कर्पूरी ठाकुर ने आन्दोलन के दौरान हमेशा जोर दिया, जिससे आन्दोलन की नैतिक और प्रभावशाली शक्ति बनी रही। जब 1975 ई. में आपातकाल लागू हुआ और विपक्षी

नेताओं को जेल में डाला गया तब कर्पूरी ठाकुर ने जेल से ही आन्दोलन की ऊर्जा को बनाए रखा। उनकी ईमानदारी और संघर्षशील छवि ने लोगों को जेपी आन्दोलन से जोड़े रखा। वे न केवल जेपी के विश्वसनीय साथी रहे बल्कि आन्दोलन की सामाजिक दिशा को भी मजबूत किया। कर्पूरी ठाकुर ने हमेशा शिक्षा और रोजगार में पिछड़ों और वंचितों के हक की बात की। यही कारण था कि जे.पी. आन्दोलन में उनकी भागीदारी ने आन्दोलन को सामाजिक न्याय की नई पहचान दी।[1] जय प्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन की सफलता में कर्पूरी ठाकुर का योगदान आधारभूत रहा। उन्होंने जनता खासकर वंचित वर्ग और युवाओं को इस आन्दोलन से जोड़कर इसे एक सशक्त सामाजिक, राजनीतिक क्रांति में बदलने में बड़ी भूमिका निभाई। उनकी पृष्ठभूमि और संघर्षशीलता ने जे.पी. आन्दोलन को जन-आधार प्रदान किया और भारतीय लोकतंत्र की दिशा बदलने में योगदान दिया।

**जे.पी.आन्दोलन का स्वरूप और युवा छात्र की भूमिका**

1970 के दशक में जब भारत में राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता चरम पर थी तब जयप्रकाश नारायण (जे.पी.) ने एक नए प्रकार के जन-आन्दोलन का नेतृत्व किया। इसे ''जेपी आन्दोलन'' या ''सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन''कहा गया। इस आन्दोलन का स्वरूप केवल राजनीति परिवर्त्तन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक सुधारों का भी वाहक था। इसका मुख्य उद्देश्य लोकतंत्र को जनोन्मुखी बनाना और शासन में नैतिकता स्थापित करना था।

जे.पी.आन्दोलन का आरंभ बिहार से हुआ। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, मूल्यवृद्धि और प्रशासनिक तानाशाही से तंग जनता ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया। आन्दोलन का स्वरूप व्यापक और सर्वव्यापी था क्योंकि इसमें किसानों, मजदूरों मध्यमवर्गीय समाज, बुद्धिजीवियों और सबसे अधिक छात्रों-युवाओं ने भाग लिया। इसने सत्ता के खिलाफ जनता की आवाज को संगठित किया और लोकतंत्र में आम जन की भूमिका को नए सिरे से परिभाषित किया। छात्र और युवा इस आन्दोलन की रीढ़ बने। 1874 में बिहार छात्र आन्दोलन ने जेपी को नेतृत्व करने का आग्रह किया। इसके बाद छात्र संगठनों ने भ्रष्टाचार और बेरोजगारी के खिलाफ संघर्ष को व्यापक रूप दिया। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्र गाँव-गाँव जाकर लोगों को जागरूक करने लगे। उन्होंने रैलियाँ, धरने पदयात्राएँ और सत्याग्रह जैसे अहिंसक तरीकों का उपयोग कर आन्दोलन को जन-आन्दोलन में बदल दिया। युवाओं ने आन्दोलन को जोश, उर्जा और दिशा दी जिससे यह केवल क्षेत्रीय न रह कर राष्ट्रीय आन्दोलन बन गया। जेपी ने युवाओं को केवल सत्ता परिवर्त्तन का नहीं बल्कि समाज परिवर्त्तन का संदेश दिया। उन्होंने ''सम्पूर्ण क्रांति''का नारा दिया, जिसका अर्थ था- राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक स्तर पर आमूल-चूल परिवर्तन। युवा शक्ति ने इसे अपना लक्ष्य मानकर आन्दोलन को निर्णायक मोड़ दिया।[2]

**बिहार के छात्र आन्दोलन में कर्पूरी ठाकुर की सक्रियता।**

कर्पूरी ठाकुर भारतीय राजनीति के एक ऐसे नेता थे जिनका जीवन संघर्ष, सादगी और जनसेवा को समर्पित रहा। वे स्वतंत्रता सेनानी, समाजवादी चिंतक और विशेषकर गरीबों, पिछड़ों तथा छात्रों के हितों के लिये सदैव सक्रिय रहे। छात्र आन्दोलन में उनकी सक्रियता ने न केवल बिहार की राजनीति को नई दिशा दी, बल्कि समाजवादी राजनीति के लिए एक मजबूत आधार भी तैयार किया। कर्पूरी ठाकुर का छात्र जीवन साधारण परिवार और गरीबी में बीता। वे शिक्षा के महत्व को भली-भांति समझते थे और मानते थे कि बिना शिक्षा के समाज में समानता स्थापित नहीं हो सकती। इसी कारण उन्होंने छात्र राजनीति और आंदोलनों को सामाजिक परिवर्त्तन का माध्यम बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौर में जब छात्र आन्दोलन तेज हुआ तब कर्पूरी ठाकुर सक्रिय रूप से उससे जुड़ गए। वे भूमिगत होकर अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन में शामिल हुए और कई बार जेल भी गए। यह उनकी वैचारिक दृढ़ता और साहस का प्रमाण था।

स्वतंत्रता के बाद भी वे छात्र आन्दोलनों के समर्थन में खड़े रहे। 1950 और 60 के दशक में जब छात्रों ने शिक्षा की असमानता, बेरोजगारी और आरक्षण जैसी मांगों को लेकर आन्दोलन किए, तब कर्पूरी ठाकुर ने उनकी आवाज को विधान सभा और संसद तक पहुँचाया। उनका मानना था कि छात्रों के सवाल केवल शिक्षा तक सीमित नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और आर्थिक बराबरी से भी जुड़े हुए हैं। कर्पूरी ठाकुर स्वयं एक शिक्षक भी रहे, स्वामियों और छात्रों की समस्याओं से भली-भाँति परिचित थे। उन्होंने छात्रों को आन्दोलनों के माध्यम से लोकतांत्रिक

चेतना और सामाजिक न्याय की लड़ाई से जोड़ा। उनकी सक्रियता ने बिहार में छात्र राजनीति को जन आन्दोलन का रूप दिया। कर्पूरी ठाकुर का छात्र आन्दोलन में योगदान केवल तत्कालीन संघर्षों तक सीमित नहीं रहा बल्कि उन्होंने आने वाली पीढ़ियों को भी यह संदेश दिया कि छात्र शक्ति परिवर्त्तन की सबसे बड़ी ताकत है। उनकी सोच और सक्रियता ने छात्रों को न सिर्फ अधिकारों के लिए लड़ना सिखाया, बल्कि समाज में समानता और न्याय के लिये जागरूक भी किया।[3]

● **जेपी के निकट सहयोगी :**

कर्पूरी ठाकुर लम्बे समय से समाजवादी विचारधारा से जुड़े हुए थे। वे जेपी के सिद्धांतों के प्रवल समर्थक थे और आन्दोलन के संगठन तथा रणनीति बनाने में सक्रिय रहे।

● **छात्र-युवा नेतृत्व को समर्थन :**

आन्दोलन में बड़ी संख्या में छात्र और युवा शामिल हुए। कर्पूरी ठाकुर ने उनके नेतृत्व को वैचारिक मजबूती दी और उन्हें अहिंसात्मक व लोकतांत्रिक रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी।

● **जन समर्थन जुटाने में भूमिका :**

कर्पूरी ठाकुर बिहार की जनता में लोकप्रिय नेता थे। उनकी छवि ईमानदार और त्यागी राजनेता की थी। जिसके कारण आन्दोलन को गाँव-गाँव तक व्यापक समर्थन मिला।

● **संघर्ष और त्याग :-**

आन्दोलन के दौरान सरकार द्वारा दमनचक्र चलाया गया। कर्पूरी ठाकुर ने न केवल जे.पी. का साथ दिया बल्कि स्वयं भी जेल गए और लोकतंत्र की रक्षा के लिए अपने राजनीतिक जीवन को दाँव पर लगाया।

● **आन्दोलन को राजनीतिक स्वरूप देना:**

छात्र आन्दोलन को केवल शिक्षा और भ्रष्टाचार तक सीमित न रखकर कर्पूरी ठाकुर ने इसे व्यापक राजनीतिक और सामाजिक बदलाव की दिशा दी। यह कारण था कि आन्दोलन ने राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभाव डाला और आपातकाल के खिलाफ जनांदोलन का आधार बना। जे.पी. आन्दोलन में कर्पूरी ठाकुर का योगदान एक सशक्त सहयोगी मार्गदर्शक और जननेता के रूप में था। उन्होंने न केवल छात्रों को वैचारिक आधार दिया बल्कि बिहार की जनता को इस आन्दोलन से जोड़ा। उनके ईमानदार नेतृत्व ने आन्दोलन को स्थायित्व और ताकत प्रदान की।[4]

● **छात्र आन्दोलन के दौरान कर्पूरी ठाकुर का त्याग संघर्ष और जेल यात्रा**

कर्पूरी ठाकुर भारतीय राजनीति के उस दौर के नेता थे जब समाज में अन्याय, असामनता और भ्रष्टाचार के खिलाफ छात्र आन्दोलन जोड़ पकड़ रहा था। बिहार के इस आन्दोलन में जय प्रकाश नारायण के आह्वान पर लाखों छात्र-युवा सड़कों पर उतरे। कर्पूरी ठाकुर, जो स्वयं एक साधारण पृष्ठभूमि से आए थे, इस आन्दोलन में छात्रों के साथ कंधों से कंधा मिलाकर खड़े हुए। उन्होंने छात्र युवाओं की आवाज को न केवल मंच पर बुलंद किया बल्कि सत्ता और तंत्र की कठोरता को चुनौती दी। आन्दोलन के दिनों में वे कई बार गिरफ्तार किए गए और जेल की यातनाएँ झेली। कर्पूरी ठाकुर ने जेल को संघर्ष का अखाड़ा बना दिया, जहाँ वे अपने साथियों को लोकतंत्र और समाजवाद के सिद्धांत समझाते थे। उनकी यह जेल यात्रा उनके व्यक्तित्व को और को और मजबूत बनाती है।

त्याग की मिसाल प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कभी व्यतिगत लाभ या पद को महत्व नहीं दिया। वे सादगीपूर्ण जीवन जीते थे और समाज के वंचित वर्गों के लिए आवाज उठाना ही उनका सबसे बड़ा संकल्प था। छात्र आन्दोलन में उनका योगदान केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक बल देने वाला भी था। उनकी प्रतिद्धता ने आन्दोलन को नई दिशा दी और छात्रों में जोश भर दिया।[5]

● **छात्र आन्दोलन के परिणाम और कर्पूरी ठाकुर की विरासत:**

1970 के दशक में बिहार का छात्र आन्दोलन भारतीय राजनीति का एक ऐतिहासिक पड़ाव माना जाता है। इस आन्दोलन की शुरूआत शिक्षा व्यवस्था, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और महँगाई जैसे मुद्दों को लेकर हुई। जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में यह आन्दोलन एक बड़े जन-आदोलन में बदल गया। छात्रों ने व्यवस्था परिवर्त्तन की माँग उठाई और समाज के हर तबके को जोड़ा।

● **छात्र आन्दोलन के परिणाम :**

छात्र आन्दोलन ने बिहार और पूरे भारत की राजनीतिक पर गहरा प्रभाव डाला। पहला परिणाम यह हुआ कि युवा शक्ति ने राजनीति में अपनी अहम भूमिका निभाई। उन्होंने लोकतंत्र में जनता की भागीदारी को नया बल दिया

और भ्रष्टाचार तथा सत्ता के दुरूपयोग के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाई। दूसरा, इस आन्दोलन ने कांग्रेस की एकाधिकारवादी सत्ता को चुनौती दी और 1977 ई. के आम चुनावों में इंदिरा गाँधी की हार का मार्ग प्रशस्त किया। तीसरा, आन्दोलन से निकले अनेक युवा ने आगे चलकर बिहार और भारत की राजनीति में केन्द्रीय भूमिका निभाने लगे। यह आन्दोलन केवल सत्ता परिवर्त्तन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और जनभागीदारी का प्रतीक बना।[6]

● **कर्पूरी ठाकुर की विरासत :-**

छात्र आन्दोलन और जनसंघर्षों की पृष्ठभूमि में कर्पूरी ठाकुर का नाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वे साधारण परिवार से उठकर 'जननायक' के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी राजनीति का आधार समाजवाद, समानता और सामाजिक न्याय था। मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने पिछड़े वर्गों के लिये 1978 ई. में आरक्षण लागू किया जिसे 'कर्पूरी फर्मूला' कहा गया यह कदम सामाजिक न्याय की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। उन्होंने शिक्षा, रोजगार और गाँव-गरीब की बेहतरी के लिए ठोस कदम उठाए।

कर्पूरी ठाकुर की सबसे बड़ी विरासत यह रही कि उन्होंने राजनीतिक को सत्ता हासिल करने का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्त्तन का साधन माना। वे सादगी, ईमानदारी और लोकहित के प्रतीक थे। छात्र आन्दोलन ने जहाँ व्यवस्था परिवर्त्तन की चेतना जगाई वहीं कर्पूरी ठाकुर ने उस चेतना को नीति और कार्यक्रमों के जरिए जमीन पर उतारा। छात्र आन्दोलन ने भारतीय लोकतंत्र में जनता की शक्ति को सामने रखा जबकि कर्पूरी ठाकुर ने उस शक्ति को सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में आगे बढ़ाया। उनकी विरासत आज भी सामाजिक न्याय की राजनीति के प्रेरणा स्त्रेत के रूप में जीवित है।[7]

**निष्कर्ष:**

जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में 1974 ई. का बिहार छात्र आन्दोलन भारतीय राजनीति का एक ऐतिहासिक पड़ाव था। इस संघर्ष में कर्पूरी ठाकुर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। वे एक ओर समाजवादी विचारधारा से गहराई से जुड़े थे, वहीं दूसरी ओर वे दलितों, पिछड़ों और वंचित वर्गों की आवाज बनकर आन्दोलन को जनसरोकारों से जोड़ रहे थे। कर्पूरी ठाकुर का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने आन्दोलन को केवल युवाओं तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों को भी इससे जोड़ा। उनकी ईमानदारी छवि और सादगीपूर्ण जीवन शैली ने छात्रों और आम जनता दोनों को आर्कषित किया। उन्होंने जे.पी. के आदर्शो-सम्पूर्ण क्रांति और सच्चे लोकतंत्र -को जमीनी स्तर पर उतारने का प्रयास किया। कर्पूरी ठाकुर ने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा, रोजगार और सामाजिक न्याय को आन्दोलन का केन्द्र बनाया जाए। छात्र आन्दोलन से उपजी राजनीतिक परिस्थिति ने आगे चलकर आपातकाल के खिलाफ बड़े संघर्ष का रूप लिया। इस दौर में कर्पूरी ठाकुर ने न केवल जे.पी. के विचारों का समर्थन किया, बल्कि जनता को लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति सजग भी किया। उनकी प्रतिबद्धता, त्याग और संघर्षशीलता ने आन्दोलन को मजबूती दी।

जय प्रकाश नारायण के छात्र आन्दोलन में कर्पूरी ठाकुर का योगदान केवल एक सहयोग नेता का नहीं बल्कि एक प्रेरक व्यक्तित्व का था। उन्होंने आन्दोलन को सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में जोड़ते हुए यह साबित किया कि राजनीति का असली उद्देश्य जनता की सेवा और लोकतंत्र की रक्षा है। उनके योगदान ने आन्दोलन को जन-आन्दोलन का रूप देकर भारतीय राजनीति की दिशा बदल दी।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. लोक नायक जयप्रकाश नारायण, शशिधर खान, अनुपम प्रकाशन पटना, प्रथम संस्करण 2018 पृ. 74-79।
2. नारायण, जय प्रकाश (1955) : मेरे तरूण मित्रों से जय प्रकाश नारायण के विचार, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद-1 पृ. सं. 235-241
3. सिंह, शंकर दयाल (1977) ' इमरजेंसी क्या सच, क्या झूठ, दिल्ली प्रिंटर्स प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली पृ., 161।
4. दिनमान (1980) 11-17 मई पृ. 13-14, टाईम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नारायण, जय प्रकाश : जय प्रकाश नारायण के विचार, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1977
6. जयप्रकाशन नारायण, सम्पूर्ण क्रांति, सर्व प्रकाशन राजघाट वाराणसी पृ. 59-60
7. कर्पूरी ठाकुर का राजनीतिक दर्शन, डॉ० विष्णुदेव रजक, जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. 25-31।